ओ३म्

वेद सूक्ति सुधा



संपादक

सुव्रतानन्द सरस्वती

ओ३म्

वेद सूक्ति सुधा

संपादक

स्वामी सुव्रतानन्द सरस्वती

आचार्य

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय

यमुनानगर

प्रकाशक

श्री आत्मानन्द प्रकाशन

वैदिक साधन आश्रम

यमुनानगर

प्रथम बार

२०००

मूल्य

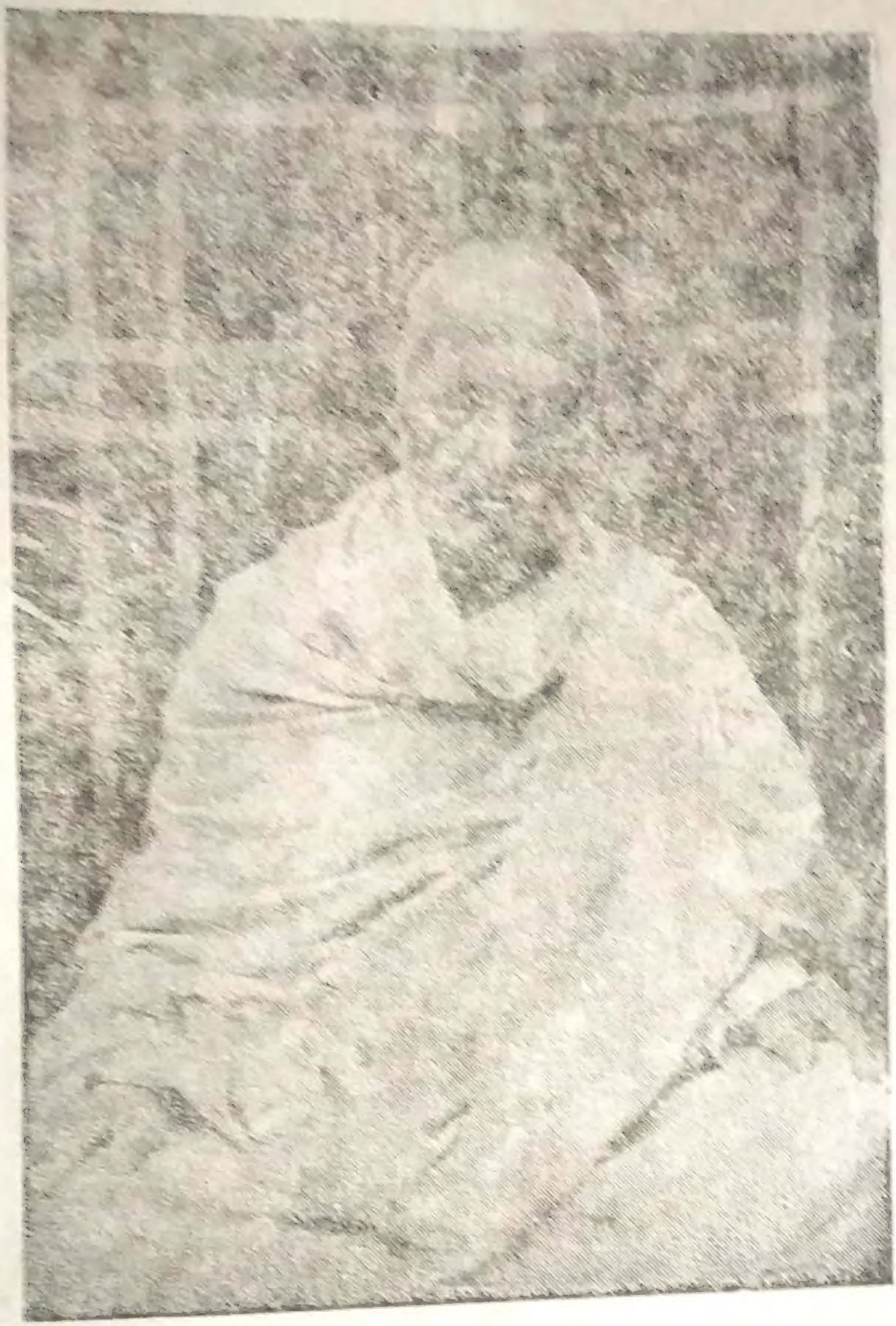
१—२५

दो शब्द

वेद का पढ़ना पढ़ाना व सुनना सुनाना सब मनुष्यों का परमधर्म है। वेद के छोटे छोटे शिक्षा प्रद वचन सभी लोग आसानी से कंठ करके वेद स्वाध्याय कर सकते हैं। हमारे इस संग्रह की विशेषता यह है कि हम वेद सूक्तियों को विषय वार प्रस्तुत कर रहे हैं। एक विषय को कम से कम ५ तथा अधिक से अधिक ३५ सूक्ति ाँ आप को एक ही स्थान पर मिल सकेंगी। इससे विषय स्पष्ट हो जावेगा और आप को विशेष आनन्द प्राप्त होगा। मुझे पूर्ण आशा है कि इस संग्रह से आप अवश्य लाभ प्राप्त करेंगे भविष्य में इससे वृहत् संग्रह प्रकाशित किया जावेगा।

विनीत
सुव्रतानन्द सरस्वती

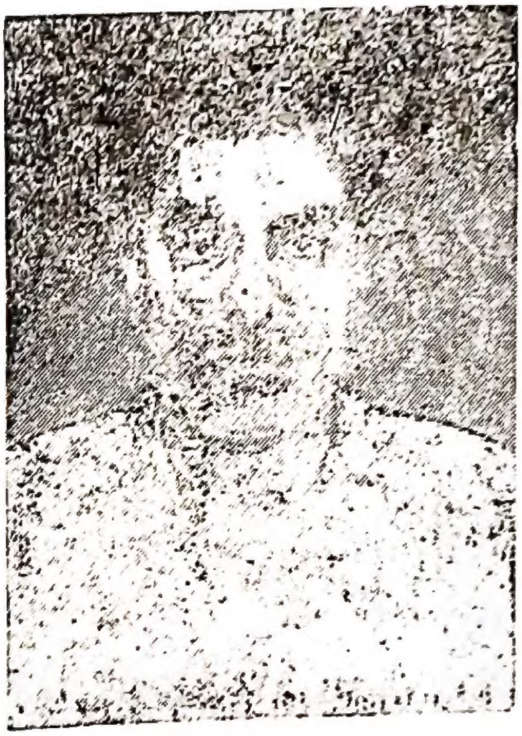
विषय सूची



श्रद्धेय श्री स्वामी आत्मानन्द जी सर-
स्वती। जिनकी पुण्य स्मृति में यह पुस्तक
प्रकाशित की जा रही है।



स्वामी सुव्रतानन्द सरस्वती'
वेद सूक्ति सुधा के संपादक



श्री इन्द्रराज आर्य मन्त्री आर्य प्रति निधि सभा उत्तर प्रदेश इस पुस्तक के प्रकाशक

ओ३म् (१)

१. ओं क्रतो स्मर । य० ४०–१५

हे कर्मशील मानव ! ओं का स्मरण कर, चिन्तन कर, ध्यान कर, जप कर ।

२. ओ३म् खं ब्रह्म । य० ४०–१७

वह ओं सर्वव्यापक, सर्व महान्, सर्वज्ञ तथा सर्व रचयिता है ।

३. ओं प्रतिष्ठ । य० २–१३

हे साधक ! ओं में स्थित होजा । अपने को ओं में लीन कर दे ।

४. ओं वर्मीव धृष्णवारुज ।

ओं कवच के समान कष्टों से रक्षा करें ।

५. ओमासः चर्षणी धृतः । ऋ० १–३–७

ओं में स्थित महात्मा मानव समाज के धारक व पोषक होते हैं ।

६. ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् ऋ० १–१६४–३९

संपूर्ण वेद उस अविनाशी परब्रह्म में स्थित है।

अग्नि (२)

७. अग्निमीडे । ऋ० १–१–१

मैं अग्नि की स्तुति करता हूं मैं ब्रह्माग्नि का गुणगान करता हूं ।

८. अग्निः पूर्वेभिः ऋषिभिरीड्यः । ऋ० १–१–२

वह अग्नि देव पूर्वज ऋषियों से स्तुति किया गया है ।

९. स देवां एह वक्षति । ऋ० १-१-२

वह अग्नि हमें दिव्य शक्तियां-दिव्य गुण दिव्य ऐश्वर्य देता है ।

१०. अग्निना रयिमश्नवत् । ऋ०—१-१-३

उस अग्नि के द्वारा ऐश्वर्य प्राप्त करो ।

११. अग्नि र्होता कविः क्रतुः सत्यः । ऋ०—१-१-५

वह ब्रह्मानि-दाता-कवि यज्ञ कर्त्ता तथा सत्य स्वरूप है ।

१२. अग्ने भद्रं करिष्यसि । ऋ०—१-१-६

हे अग्निदेव आप सदा कल्याण करते हैं ।

१३. उपत्वा अग्ने···नमो भरन्त एमसि । ऋ०—१-१-७

हे अग्ने हम तुझे नमस्कार करते हुए तेरे समीप आना चाहते हैं । हम विनय पूर्वक झुकते हुये ही तुझे पा सकते हैं ।

१४. स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव । ऋ०—१-१-९

हे अग्नि देव जैसे पिता के पास पुत्र सुख से निर्भय होकर पहुँच जाता है उसी प्रकार हम आपके पास सुख पूर्वक पहुंच सकें ।

१५. अग्निना अग्निः समिध्यते । ऋ०—१-१२-६

प्रदीप्त अग्नि से सुप्त अग्नि जलाई जाती है ।

१६. अग्निं दूतं वृणीमहे । ऋ०—१-१८—१

वह अग्नि दूत है संदेश देने वाला है हम उसका वर्णन करें ।

१७. अग्निर्नो वनते रयिम् । य०—१७-१३

वह अग्नि हमें अध्यात्मिक तथा भौतिक संपूर्ण ऐश्वर्य देता है ।

१८. अग्निः वृत्राणि जंघनत् । साम०—मन्त्र-४

अग्नि वृत्रों पापों तापों का विनाशक है ।

१९. अग्निर्नः पातु दुरितादवद्यात् । य— -४—१५

अग्नि हमें निंदित दुष्कर्मों से बचावे ।

२०. त्वमग्ने व्रतपा असि । य०—४--१३

हे अग्ने तुम व्रतों के नियमों के रक्षक हो ।

२१. पाहिनो अग्ने रक्षसः । ऋ १-३६—१५
हे अग्ने राक्षसों से हमारी रक्षा करो।

२२. पावकोऽस्मभ्यं शिवो भव । य०—१७-५
वह पवित्र कर्त्ता अग्नि हमारे लिये कल्याणकारी हो।

२३. तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि । य० ३-१७
हे शरीर रक्षक अग्निदेव हमारे शरीरों की रक्षा करो।

२४. आयुर्दा अग्नेऽसि आयुर्मे देहि । य० ३-१७
हे जीवन प्रद अग्ने मुझे सुजीवन-दीर्घ जीवन प्रदान करो।

२५. वर्चो दा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि । य० ३-१७
हे तेजः प्रदान करने वाले अग्निदेव हमें तेजस्वी बना दो।

२६. अग्न आयूंषि पवसे । ऋ० ६-६६-१६
हे अग्ने आप हमारे जीवनों को पवित्र करने वाले हो।

२७. अग्निः ऋषिः पवमानः । ऋ०—६-६६-२०
वह अग्नि द्रष्टा तथा पवित्र कर्त्ता है।

२८. अग्न आयाहि वीतये । साम-मन्त्र १
हे अग्ने हृदय को प्रकाशित करने के लिये आइये।

२६. अग्ने नय सुपथा राये । य०—४०-१६
हे अग्ने ऐश्वर्य प्राप्ति के लिये सुपथ से ले चलो।

३०. चक्षुष्पा अग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि । य०—२-१६
हे अग्निदेव तुम नेत्रों के रक्षक हो मेरे नेत्रों की रक्षा करो।

३१. परिमाग्ने दुश्चरिताद् बाधस्व । य०—४-२८
हे अग्निदेव मुझ दुश्चरित्र से, दुराचार व दुर्व्यवहार से दूर करो।

३२. अग्ने त्वं सुजागृहि । य०—४-१४
हे अग्ने तुम सदा जाग रहे हो। हमें भी सजग करते रहो।

३३. अग्निः ज्योतिः ज्योतिरग्निः स्वाहा ।— य० ३-९

वे अग्नि देव ज्योति पुंज हैं। हम उसके लिये समर्पित हों।

३४. अग्नि दूतं पुरो दधे। य०—२२-७

वह अग्नि दूत है सत्यसंदेश दाता है हम उसे अपने समक्ष रक्खें।

सत्य ३

३५. इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि। य०—१—५

मैं असत्य से हटकर सत्य का प्राप्त करता हूँ।

३६. हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्। य०—४०-१७

उस चमकीले पदार्थ से सत्य का मुख ढक जाता है।

३७. अभूदुः पारमेतवे पन्था ऋतस्य। ऋ०—१—४६—११

भव सागर को पार करने के लिये निश्चय ही सत्य और सदाचार का मार्ग है।

३८. ऋतं सत्यम् ऋतं सत्यमग्निम् पुरीष्यमंगिस्वद् भरामः। य०—११-४७

हे देव! वह सत्य तथा सदाचार अग्नि के तुल्य पालक है हम प्राणवत् उसे अपने अन्दर भर लें।

३९. वाचः सत्यमशीय। य०—३९-४

मैं वाणी से सदा सत्य बोलूं।

४०. ऋतस्य योनिमासदम्। ऋ०—९-६४-२२

मैं सत्य और सदाचार का आश्रय ग्रहण करूं।

४१ ऋतस्य जिह्वा पवते। साम म०—७०-१

सत्यमयी वाणी पवित्र कर देती है।

४२. ऋतवान ऋत जाता ऋतावृधो घोरासः अनृतद्विषः ।

ऋ०—७-६६-१३

संसार के सच्चे नेता-सत्य से युक्त, सत्य में जन्मे हुये, सत्य का बढ़ाने वाले तथा असत्य के घोर विरोधी होने चाहिएं।

४३. सत्यमूचु र्नरा एवाहि चक्रुरनु । ऋ० ४-३३-६
वीर नर सत्य बोलते हैं उसके साथ ही सत्याचरण भी करते हैं।

४४. ऋतस्य पथा प्रेत । य०—७-४५
सत्य और सदाचार के मार्ग पर चलो।

४५. ऋतस्य धीतिः वृजनं हिनस्ति । ऋ०—४-२३-८
सत्य का चिन्तन पाप विनाशक है।

४६. सत्यं बृहत् । अ० १२–१-१
सत्य महान् है–सर्वश्रेष्ठ है।

४७. सत्येनोत्तभिता भूमिः । अथर्व—१४-१-१
इस विश्व का सत्य ही आधार है।

४८. अमेध्यो वै पुरुषो यदनृतं वदति ।
वह पुरुष जो झूठ बोलता है अपवित्र है।

४९. सत्यं ऋतं च चक्षुषी ।
सत्य और सदाचार दो नेत्र हैं।

५०. सत्यमेव जयते नानृतम् मुण्डकोपनिषद् १-१-६
सदा सत्य की ही विजय होती है झूठ की नहीं।

१५. सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा । उपनिषद्
वह परमात्मा सत्य तथा तप से प्राप्त होता है।

५२. अश्रद्धामनृतेऽदधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः । य०-१६-७७

प्रजापति ने असत्य के प्रति अश्रद्धा तथा सत्य के प्रति श्रद्धा का उपदेश किया है।

५३. सत्येनोर्ध्वस्तपति । अ०-१०-८-१६

महा मानव सत्य के प्रताप से सर्वोच्च पद पाकर चमकते हैं।

५४. ऋतं वोचे नमसा । ऋ०—४-५-११

मैं शालीनता से, नम्रता से मधुर सत्य बोलूं।

५५. ऋतस्य पन्थामन्वेति साधुः । ऋ०-१-१२४-३

सज्जन सदा सत्य व सदाचार के पथ पर चलते हैं।

५६. सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन् । ऋ०—६—७३—१

धर्मात्मा को सत्य को नाव पार लगाती है।

५७. ऋतस्य पथि वेधा अपायि । ऋ०—६—४४—८

सत्य पथ पर चलते हुये भगवान् रक्षा करते हैं।

५८. ऋतमित् चिकिद्धि । ऋ०—५—१२—२

सत्य की ही चाहना कर।

५९. सुगा ऋतस्य पन्थाः । ऋ०—८—३१-१३

सत्य का मार्ग सरल है, अकुटिल है।

६०. ऋतस्य गोपा न दभाय । ऋ०—८७—३—८

सत्य का रक्षक दबाया नहीं जा सकता।

६१. सत्यं वदन् सत्य कर्मन् । ऋ०—६—११३—८

तू सत्य भाषण कर तथा सत्यानुष्ठान कर।

६२. ऋतस्य श्लोको बधिराततर्द । ऋ०—४—२३—८

सत्य की पुकार बहरों के कान खोल देती है।

६३. सत्यं वक्ष्यामि नानृतम् । अथर्व ४—९—७
मैं सत्य बोलूंगा झूठ नहीं ।

६४. सा मा सत्योक्तिः परिपातु । ऋ०—१०—३७—२
वह सत्य वचन मेरी रक्षा करें ।

६५. सत्यामाशिषं कृणुत । ऋ०—१०—६७—११
सदा सत्य कामना करो ।

६६. आकूतिः सत्या मनसो में अस्तु । ऋ०-१०-१२२—४
मेरे मन के संकल्प सदा सत्य हों ।

६७. सत्यं च मे श्रद्धाच मे यज्ञेन कलपन्ताम् य०-१८-५
मेरा सत्य तथा श्रद्धा यज्ञ से सफल हों ।

६८. रश्मिना सत्याय सत्यं जिन्व । य०-१५—६
ज्ञान की किरण से सत्य के लिये प्रचार के सत्य के अनुष्ठान की प्रेरणा कर ।

६९. सत्यं कृणुहि चित्तमेषाम् । अथर्व—३-१—४
हे प्रभो ! इन मानवों के चित्त को सच्चा निर्मल-पवित्र बना दो ।

७०. ऋतवस्थ ऋतावृधः । य०-१७—३
हे प्रजाजनो तुम ईश्वरीय सत्य नियमों के पालक तथा सत्य को बढ़ाने वाले बनो ।

वेद-४

७१. स्तुता मया वरदा वेद माता । अथर्व-१९—७१-१
हे मानवो ! मैंने तुम्हारे लिये वर देने वाली जीवन निर्माण करने वाली वेद माता प्रस्तुत की है ।

७२. यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः । य०—२६-२
जैसे मैं इस कल्याणी वाणी वेद का मानव मात्र के लिये उपदेश करता हूं वैसे तुम भी करो ।

७३. पावका नः सरस्वती । ऋ—१०-३-१०
यह सरस वेदवाणी हमें पवित्र करता है ।

७४. यज्ञं दधे सरस्वती । ऋ०—१-३-११
यह रस भरी वेदवाणी हमारे जीवन यज्ञों की आधार है ।

७५. महो अर्णः सरस्वती । ऋ०—१-३-१२
यह सरस्वती ज्ञान का महान् समुद्र है ।

७६. सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते । अ०—१८-१-४१
उस देवाधिदेव की कामना करने वाले वेद वाणी का स्वाध्याय करते हैं ।

७७ सरस्वतीमध्वरे तायमाने । अ०—१२—१—४१
यज्ञों के विस्तार में वेदवाणी का उच्चारण करते हैं ।

७८ सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते । अ०—१८—१—४१
वेद वाणी का पुण्यात्मा मनीषी सदा स्वाध्याय करते हैं ।

७९ सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् । अ०—१८—१—४१
सरस्वती आत्म समर्पक को वरणीय ऐश्वर्य प्रदान करती है ।

८१. मिमीहि श्लोकमास्ये । ऋ०—१—३९—१४
स्तुत्य वेद मन्त्रों को कंठ करो ।

८१. पर्जन्य इव ततन । ऋ०—१—३९—१४
फिर मेघ के समान उनका प्रचार व प्रसार करो ।

८२. संश्रुतेन गमेमहि । अ०—१—१—४
हम सुने हुए वेदोपदेश के अनुसार आचरण करें ।

८३. मा श्रुतेन विराधिषि। अ०-१-१-४

हम सुने हुये वेदोपदेश के विरुद्ध आचरण न करें।

८४. सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।

वेद वाणी हमें सुख तथा ऐश्वर्य देती है।

यज्ञ (५)

८५. देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे। य०-१-१

वह कल्याणकारी देव प्रेरक पिता हमें श्रेष्ठतम कर्म (यज्ञ) की प्रेरणा करता है।

८६. कर्मणे वां वेषाय वाम्। य०—१-३

तुम दोनों (आत्मा और मानव देह) यज्ञ कर्म करने के लिये हो अन्त में तुम्हारा वियोग निश्चित है।

८७. आयुः यज्ञेन कल्पताम्। य०—१८-२९

यह जीवन यज्ञ के द्वारा सफल हो।

८८. प्राणो यज्ञेन कल्पताम्। य०—१८-२९

ये प्राण यज्ञ से सफल होते हैं।

८९. चक्षुर्यज्ञेन कल्पताम्। य०—१८-२९

मेरे नेत्र यज्ञ द्वारा सफल हों।

९०. श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताम्। य०—१८-२९

ये मेरे कान यज्ञ द्वारा सफल हों।

९१. वाग्यज्ञेन कल्पताम्। य०—१८-२९

यह मेरी वाणी यज्ञ द्वारा सफल हो।

९२. मनो यज्ञेन कल्पताम्। य०—१८-२९

यह मेरा मन यज्ञ द्वारा सफल हो।

९३. आत्मा यज्ञेन कल्पताम्। य०—१८-२९

यह आत्मा यज्ञ के द्वारा बलवती हो।

९४. स्वर्यज्ञेन कल्पताम्। य०—१८-२९

यह मेरा सुख-आनन्द यज्ञ से संपन्न हो।

९५. ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताम् य०—१८-२९

मेरी ज्ञान ज्योति की सफलता यज्ञों से है।

९६. पृष्ठं यज्ञेन कल्पताम्। य०—१८—२९

मेरी कमर यज्ञों के लिये समर्थ हो।

९७. ब्रह्मा यज्ञेन कल्पताम्। य०—१८-२९

मेरा विवेक यज्ञों द्वारा सफल हो।

९८. यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। य०—१८-२९

मेरा जीवनयज्ञ यज्ञों द्वारा सफल हो।

९९. यज्ञो देवानाम् प्रत्येति सुम्नम्। य०—८-४

यह यज्ञ देवों को सुख शान्ति देता है। तथा देवों की संगति हमें सुख प्रदान करती है।

१००. यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। य०—३१-१६

देवों ने यज्ञों के द्वारा ही प्रभु का पूजन किया और किया करते हैं।

१०१. अयं यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः। अ०—९-१०-१४

यह यज्ञ संपूर्ण विश्व की नाभि है। रक्षा केन्द्र है।

१०२. यं कं च लोकमगन् यज्ञस्ततो मे भद्रमभूत्। य०-८-६०

यह यज्ञ जहां भी जाता है वहीं मेरा कल्याण करता है।

१०३. यज्ञस्य दोहो विततः पुरुत्र । य—८-६२

यज्ञ का श्रेष्ठ फल सर्वत्र फैल जाता है।

१०४. दिविधा इमं यज्ञमिमं यज्ञं दिविधाः । य०—३८-११

इस यज्ञ की भावना को द्युलोक तक पहुंचा दो।

१०५. मतिश्च में सुमतिश्च में यज्ञेन कल्पन्ताम् । य०—१८-११

मेरी मति तथा सुविचार यज्ञ से सफल हों।

१०६. सूषाश्च में सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् य०—१८-६

मेरे जीवन की ऊषावेला तथा सुदिन यज्ञों से सफल हों।

१०७. ऊर्ध्वमिममध्वरम् । य०—६-२५

इस यज्ञ की भावना को ऊंचा उठाओ।

१०८. स्वर्यन्तु यजमानाः स्वस्ति । य०—१७-६९

यजमान कल्याण, सुख, शान्ति प्राप्त करें।

१०९. देवान् यज्ञेन बोधय । अ०—१९-६३-१

देवों को यज्ञ के द्वारा जानो। यज्ञ के द्वारा दिव्य गुणों का ज्ञान प्राप्त करो।

११०. यजाम देवान् यदि शक्नवाम । ऋ—१-२७-१३

यदि हम कर सकें तो देवों की संगति करें हम देवों का पूजन करें।

१११. ब्रह्म यज्ञं च वर्धय । अथर्व—३-२०-५

हे मानव ज्ञान तथा यज्ञ को बढ़ा।

११२. ईजानाः स्वर्गं यन्ति लोकम् । अ०-१८-४-२

यज्ञ कर्त्ता निश्चय ही स्वर्ग को जाते हैं।

११३. यजध्वं हविषा तना गिरा । ऋ०—२–२-१

तन मन तथा धन से यज्ञ करो।

११४. ऊर्ध्वं कृणुत अध्वरस्य केतुम् ।

यज्ञ की ध्वजा को ऊंचा फहरा दो ।

११५. अयज्वानः सनकाः प्रेतमीयुः । ऋ०-१-३३-४

यज्ञ न करने वाले दरिद्र नष्ट हो जायें ।

११६. सत्रस्य ऋद्धिरसि । य०—८—५२

हे मानव तू यज्ञ का बढ़ाने वाला है ।

११७. इयं मे यज्ञिया तनूः । य०—४-१३

यह मेरा शरीर यज्ञमय हो जाय ।

११८. स्वाहा यज्ञं मनसः स्वाहा । य०—४—६

मैं स्वाहा (पूर्ण त्याग) करता हुआ हृदय से श्रद्धा से यज्ञ करूं ।

११९. यज्ञैः परिभूषत श्रिये । ऋ०—९-१०४-१

ऐश्वर्य तथा सौंदर्य की प्राप्ति के लिये अपने आप को यज्ञों से सुशोभित करो ।

१२०. अयज्ञियो हतवर्चो भवति । अ०—१२-२-३७

यज्ञ न करने वाला तेजहीन हो जाता है ।

१२१. ऋचा स्तोमं समर्धय । य०—१-१८

सत्य मधुर वाणी से यज्ञ को बढ़ा ।

१२२. नायं लोकोऽस्ति अयज्ञस्य । गीता ।

यज्ञ न करने वाले को इस लोक में सुख नहीं परलोक में कहाँ।

१२३. अग्नौ प्रास्ताहुति स्तावत् आदित्यमुपतिष्ठते । मनुः

अग्नि में डाली आहूतियाँ आदित्य लोक तक जाती हैं।

श्रद्धा (६)

१२४. श्रद्धया अग्निः समिध्यते। ऋ०-१०-१५१-१

श्रद्धा से अग्नि जलाई जानी चाहिये।

१२५. श्रद्धया हूयते हविः। ऋ० १०-१५१-१

उसमें श्रद्धा पूर्वक हवियाँ डालनी चाहिए।

१२६. श्रद्धया सत्यमाप्यते। य०-१९-३०

श्रद्धा से मानव सत्य को प्राप्त करता है।

१२७. श्रद्धया विन्दते वसु। ऋ०-१०-१५१-४

श्रद्धा से मानव ऐश्वर्य प्राप्त करता है।

१२८. एतं लोकं श्रद्धधानाः सचन्ते।

इस आनन्दमय लोक को श्रद्धावान् प्राप्त करते हैं।

१२९. प्रियं श्रद्धे ददतः। ऋ०—१०-१५१-२

श्रद्धा पूर्वक देने वाले का कल्याण होता है।

१३०. प्रियं श्रद्धे दिदासतः। ऋ०—१०-१५१-२

जो श्रद्धा से देना चाहता है उसका भी कल्याण हो।

१३१. श्रद्धां प्रात र्हवामहे। ऋ०-१०-१५१-५

हम प्रातः श्रद्धा का आह्वान करें। हमारे प्रातः कालीन कार्य श्रद्धा युक्त हों।

१३२. अश्रद्धाम् अनृते अदधात्। य०—१९-७७

प्रजापति ने झूठ के प्रति अश्रद्धा धारण कराई है।

१३३. श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः । य०—१९-७७

और उसी प्रजा के स्वामी ने सत्य के प्रति श्रद्धा धारण का उपदेश किया है।

१३४. व्रतं च श्रद्धां च उपैमि । य०—२०-२४

मैं व्रत तथा श्रद्धा को धारण करता हूं।

१३५. श्रद्धां भगस्य मूर्धनि । ऋ०—१०-१५१-१

श्रद्धा ऐश्वर्यों का मूर्धा है।

१३६. श्रद्धामयोऽयं पुरुषः ।

यह पुरुष श्रद्धामय होना चाहिये। श्रद्धोपेत होने में ही कल्याण है।

माधुर्य (७)

१३७. मधु मधु मधु । य०—३७-१३

मेरा हृदय-वाणी तथा कर्म मधुर हो मेरे ज्ञान-कर्म-उपासना मधुर हों। मेरे लिये ईश्वर-जीव-प्रकृति मधुर हों। भूत-वर्त्तमान भविष्यत मधुर हों। बाल्यावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था मधुर हों। प्रातः-मध्य-सायं सवन मधुर हों।

१३८. माध्वीर्गावो भवन्तु नः । य०—१-२९

हमारी-वाणियां भूमियाँ-तथा गौएं मधुर हों।

१३९. जिह्वाया अग्रे मधु मे । अ०—१-३४-२

मेरी जिह्वा के अग्रभाग में मधु हो।

१४०. जिह्वा मूले मधूलकम् । अ०—१-३४-२

मेरी जिह्वा का मूल मधुर हो।

१४१. वाचं वदत भद्रया। अ०- ३-३०-२

सदा कल्याणकारी मधुर वाणी बोलो।

१४२. वाचा वदामि मधुमत्। अ०-१-३४-३

मैं वाणी से मधु के समान सत्य-हित और मित बोलूं।

१४३. भूयासं मधु संदृशः। अ०-१३४-३

मेरा जीवन मधु सदृश मधुरता पूर्ण तथा हितकारी हो।

१४४. माध्वीर्नः सन्तु ओषधीः। य०-१३-२७

हमारे लिए औषधियाँ तथा अन्न मधुर हों।

१४५. यद् वदामि मधुमत् तद् वदामि। अ०-१२-१५८

मैं जो कुछ भी बोलूं वह माधुर्य पूर्ण हों।

१४६. मधुमन् मे निक्रमणम्। अ०-१-३४-३

मेरा जाना मधुर हो।

१४७. मधुमन् मे परायणम्। अ०-१-३४-३

मेरा लौटना भी मधुर हो।

१४८. उग्रं वाचोऽपावधीः। साम—३५३

हे मानव! उग्र, तीखी कटुवाणी का विनाश कर दे।

१४९. वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु। य०—३०-१

वह वाणी का स्वामी मेरी वाणी को मधुर कल्याणमयी बनावे।

१५०. मधुमतीस्थ मधुमतीं वाचम् उदेयम् । अ०-१६-१-२

हे गुरुजनों आप माधुर्य संपन्न हो मैं भी मधुर वाणी का प्रयोग करूं ।

पाप विनाश (८)

१५१. परोऽपेहि मनस्पाप । अ०—६—४५-१

हे मन के पाप दूर चला जा ।

१५२. देव कृतस्यैनसोऽवयजनमसि । य०—८-१३

हे अग्ने ! आप देव कृत पाप का विनाश करें ।

१५३. पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमसि । य—८-१३

हे देव ! पितृकृत पाप का विनाश करें ।

१५४. मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि । य०—८-१३

हे प्रभो ! मनुष्य कृत पापों का नाश करें ।

१५५. आत्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि । य०—८-१३

हे प्रभो आत्मकृत पापों का विनाश हो ।

१५६. एनस एनसोऽवयजनमसि । य०—८-१३

हे देव ! आप प्रत्येक पाप का विनाश करें ।

१५७. अपावमपकिल्बिषम् । य०—३५—११

हे पाप विनाशक देव ! मानसिक पाप तथा अज्ञान जन्य पाप का विनाश करो ।

१५८. आरे देवा द्वेषः । ऋ०-१०-६३-१२

हे देवो ! द्वेष हम से दूर रहें।

१५९. अप विश्वामनाहुतिम् । ऋ०-१०-६३-१२

हे कल्याण कारिन् हमारी सम्पूर्ण अनाहुति यज्ञ न करने की भावना को दूर कर दें।

१६०. पापो नृषद्वरो जनः । ऐतरेय ब्राह्मण अ०—३३

आलसी मनुष्य पापी है।

१६१. मा वः स्तेन ईषत । य०-१-१

तुम पर शैतान का शासन न हो।

१६२. पाप्मा हतो न सोमः । य०—६-३५

पाप का विनाश हो पुण्य का प्रकाश हो।

१६३. विश्वा ह्यग्ने दुरिता सहस्व । य०—२७—८

हे अग्ने सब दुरितों का मुकाबला करने की शक्ति दो।

१६४. मा मा प्रापत् पाप्मा मोत मृत्युः । अ०-१७-१-६

मुझे न पाप प्राप्त हो न मृत्यु सताये।

१६५. यवपास्मद् द्वेषो यवयाऽरातिः । य०—५-२६

हम से द्वेष तथा अदान भावना दूर हो।

१६६. मा हृणीथाः । साम मन्त्र—२२६

क्रोध मत करो।

१६७. दुरितानि परासुव । य०—३०—३

हे देव ! दुर्गुतियों-दुर्गुणों, पापों तापों को दूर करो।

१६८. आरे स्याम दुरितादभीके ।

हम बुराइयों से दूर रहें।

१६९. पाहि नो अग्ने रक्षसः । ऋ०—१-३६-१५
हे अग्ने ! इन राक्षसों से काम-क्रोध-लोभ मोह-अभिमान आदि से रक्षा करो।

१७०. अनागसोऽदितये स्याम । ऋ०—१-२५-१५
हे अदिति (पृथ्वी) की सेवा के लिए निष्पाप हों।

१७१. स नः पर्षद् अतिद्विषः । ऋ०—१०-१८७-१
वह इन्द्र हमें द्वेषों से दूर रक्खे।

१७२. उरुष्या नो अघायतः समस्मात् । य०—२५-४८
हे देव हमें समस्त पापों से बचाओ।

१७३. अप नः शोशुचदघम् । य०—३५-६
हमारा पाप नष्ट हो जावे।

१७४. आरे बाधस्व दुच्छुनाम् । य०—३५—१६
हे अग्ने हमें पापरूप पागल कुत्तों से बचाओ।

१७५. पुनर्नः पाह्यंहसः । य०—१२-९
हे अग्ने पुनः पुनः इन पापों से हमारी रक्षा करो।

१७६. मान्तस्थुर्नो अरातयः । ऋ०—१-५७-१
कृपणता रूप शत्रु हमारे अन्दर न रहें।

मेधा (९)

१७७. देवीं धियं मनामहे । य०—४-११
हे प्रभो। हम दिव्य मतियां मांगते हैं।

१७८. अग्ने मेधाविनं कुरु । य०—३२-१४
हे अग्ने मुझे मेधावी बनादो।

१७९. धियो यो नः प्रचोदयात् । य --३६-३
वह ब्रह्म हमारी बुद्धियों को शुभ मार्ग में प्रेरित करे।

१८०. त्वं नो मेधे प्रथमा । अ०—६-१०८-१
हे मेधा तू मेरे जीवन में प्रथम है, मुख्य है।

१८१. अहं सुमेधा वर्चस्वी । अ०-१९—४०-१
मैं सुमेधा युक्त वर्चस्वी तेजस्वी बनूं।

१८२. धिय आतनुध्वम् । ऋ०—११—१०१-२
बुद्धियों का विस्तार करो।

१८३. मेधामाशासत श्रिये । साम०—मन्त्र-१०१
ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए मेधा की आकांक्षा करो।

१८४. केतपूः केतं नः पुनातु । य०—११—७
ज्ञान शोधक देव हमारी बुद्धियों को शुद्ध करे।

१८५. मनीषिणः प्ररभध्वम् मनीषाम् । ऋ०—१०—१११—१
हे धीमानों मनन शीला मति का अभ्यास करो।

१८६. मेधां सायं मेधां प्रातः । अ०६—१०८—५
हम सायं प्रातः पवित्र मेधा का आह्वान करें।

१८७. सनिं मेधामयासिषम् । य०—३२-१३
मैं सद् असद् विवेक करने वाली बुद्धि प्राप्त करूं।

१८८. मेधां मे वरुणो ददातु । य०—३२-१४
वरणीय देव मुझे मेधा प्रदान करें।

१८९. मेधां मे सविता आदधातु ।
वह प्रेरक पिता मुझ में मेधा का आधान करे।

१९०. मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु।

वह दिव्य ज्ञान युक्ता वेदवाणी मुझ में मेधा का संचार करे।

१९१. मेधां मे अश्विनावाधत्तां पुष्करस्रजौ।

वे कमल की माला के समान पवित्र आचार्य तथा उपदेशक अथवा प्राण व अपान मुझ में मेधा का संचार करें।

स एक एव (१०)

१९२. एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति। ऋ०—१-१६४-४६

उस एक देव को विद्वान् अनेक नामों से पुकारते हैं।

१९३. भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। य०—१३-४

सम्पूर्ण प्राणियों का प्रसिद्ध पति पालक देव एक ही है।

१९४. महित्वा एक इद् राजा। य० – २३-३

वह अपनी महिमा से एक ही प्रकाशक है।

१९५. न द्वितीयो न तृतीयः चतुर्थो नाप्युच्यते। अ०-१३-४-१६

वह एक है, दो नहीं, तीन नहीं, चार नहीं।

१९६. न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते। अ०—१३-४-१७

वह एक है पांच नहीं छः नहीं; सात नहीं।

१९७. नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते।

वह आठ नहीं नौ नहीं दस नहीं वह तो एक ही है।

१९८. स एक एव एक वृत एक एव। अ०—१३-४-१९

वह तो एक ही है। वह सर्वव्यापक अकेला ही है।

१९९. द्यावा पृथिवी जनयद् देव एक: । अ०—१३-४-१२

उस एक देव ने द्यु लोक व भूलोक उत्पन्न किए हैं।

२००. य एक इत् तमुष्टुहि । ऋ०—६-४५-१६

जो एक सर्व रचयिता कर्त्ता-धर्ता हर्त्ता है उसी की स्तुति करो।

२०१. एक एव नमस्य विक्ष्वीड्य: । अ०—२-२-१

समस्त प्रजा में वह एक ही नमन करने योग्य है।

२०२. एको विश्वस्य भुवनस्य राजा । ऋ०—६-३६-४

वह एक ब्रह्म सम्पूर्ण भुवन का प्रकाशक है।

२०३. सम्राडेको विराजति । य०—१२-११७

वह एक सम्राट सम्पूर्ण विश्व में विराजमान है।

२०४. एकं ज्योति र्बहुधा विभाति ।

वह एक ज्योति अनेक प्रकार से प्रकाशित हो रहो है।

२०५. एको देव: सर्वभूतेषु गूढ: । उपनिषद्

वह एक देव सब प्राणियों में छिपा है।

सर्वव्यापक (११)

२०६. स ओत: प्रोतश्च विभू: प्रजासु । य०—३२-८

वह प्रभु-सारी प्रजाओं में ओत प्रोत है, व्यापक है।

२०७. यत्र विश्वं भवत्येकनीडम् । य०—३२-८

उस सर्व व्यापक के समक्ष यह विश्व ब्रह्माण्ड एक घोंसला है।

२०८. स पर्यगात् । य०—४०-८

वह ब्रह्म सर्व व्यापक है।

२०६. ईशा वास्यमिदं सर्वम् । य०—४०-१

यह सारा विश्व ईश्वर का निवास है।

२१०. विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखः । य—१७-१६

वह सर्व व्यापक देव सर्वत्र देख रहा है सर्वत्र बोल रहा है।

२११. विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् । य०—१७-१६

उस ब्रह्म की कर्म शक्ति व गति शक्ति सर्वत्र है।

२१२. तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः । य-४०२

वह देव सब के अन्दर है बाहिर भी है।

२१३. त्वं हि विश्वतो मुख विश्वतः परिभूरसि । ऋ०-१-६७-६

हे देव आप सर्वव्यापक हैं विश्वतः मुख हैं। चारों ओर भाषण शक्ति से सम्पन्न हैं।

२१४. तद् विष्णोः परमंपदं सदा पश्यन्ति सूरयः ।

ऋ०—१-२२-१०

उस सर्व व्यापक के परम पद को विद्वान् देखा करते हैं।

२१५. विष्णोः कर्माणि पश्यत । ऋ०—१–२२-६

उस सर्व व्यापक देव के कर्मों को देखो।

२१६. एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः । य—३२-४

वह देव सब दिशाओं में व्याप्त है।

२१७. सविता पश्चात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्तात् सविताधरात्तात् । ऋ०—१०-२६-१४

वह सर्वोत्पादक देव आगे पीछे ऊपर नीचे सर्वत्र व्यापक है।

२१८. प्रत्यङ्‌जनास्तिष्ठति सर्वतो मुखः। य०—३२-४
हे मनुष्यो वह विश्वतो मुख सदा सामने उपस्थित है।

२१९. तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा। य०–३१-१९
उस देव में सारे भुवन स्थित हैं।

सर्व रक्षक (१२)

२२०. विष्णो हव्यं रक्ष। य०—१-४
हे विष्णो समर्पित की रक्षा करो।

२२१. त्वामवस्युराचके। ऋ०—१-२५-१९
मैं रक्षा का इच्छुक मुझे पुकार रहा हूं।

२२२. इन्द्र प्रणो रथम् अव। ऋ०–८-८०-४
हे इन्द्र इस जीवन रथ की रक्षा करो।

२२३. पाहि मा दिद्योः। य०—२-२०
हे प्रभो पाप रूप वज्र से मेरी रक्षा करो।

२२४. नास्यक्षीयन्त ऊतयः।
उस सर्व रक्षक के रक्षा साधन कभी समाप्त नहीं होते।

२२५. त्वं नो अग्ने अन्तिम उत त्राता। ऋ०—५-२४-१
हे अग्ने आप हमारे समीप हैं और रक्षक हैं।

२२६. अविता जरितॄणाम्। ऋ०—४-३१-३
हे देव आप उपासकों के रक्षक हैं।

२२७. शतं भवासि ऊतिभिः । ऋ०—४-३१-३

हे सर्व रक्षक आप सैंकड़ों रक्षा साधनों द्वारा रक्षा कर रहे हैं।

२२८. कया त्वं न ऊत्यामिः प्रमन्दसे वृषन् । ऋ०—८-८३-१६

हे सुखों के वर्षक ! देव आप किस रक्षा साधन से रक्षा करते हैं हम जान नहीं सकते ।

२२९. त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रम् । ऋ०—६-४७-११

उस सर्व रक्षक देव को पुकार रहा हूं।

२३०. हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुपह्वये । ऋ०—१-२२-५

उस हिरण्यपाणि सविता को मैं रक्षार्थ पुकारता हूं।

२३१. विश्वं तद् भद्रं यदवन्ति देवाः । य० ३४-५८

वह सब कल्याण मय है देव जिसको रक्षा करते हैं।

निर्भयता (१३)

२३२. अभयं मित्रात् अभयम् अमित्रात् । अ०—१९-१५-६

हमें मित्र से भय न हो, शत्रु से भी भय न हो।

२३३. सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते ।

साम०—८२८

हे बलों के स्वामी तेरी मैत्री से शक्ति सम्पन्न हो हम कभी भी न डरें।

२३४. नो अभयं कृधि । साम-२७४

हे देव हमें निर्भय करो।

२३५. मा भेर्मा संविक्थाः । य०—१-२३

मत डरो, मत अलग होवो।

२३६. यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। य०—३६-२२
हे देव आप जहां-जहां से चाहते हैं हमें वहां-वहां से निर्भय करो।

२३७. अभयं नः पशुभ्यः। य०—३६-२२
हमें पशुओं से निर्भय करो।

२३८. अभयं पश्चात् अभयं पुरस्तात्। अ० - १२-१५-५
हम पीछे से निर्भय हों, सामने से निर्भय हों।

२३९. यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न बिभीतो न रिष्यतः एवा मे प्राण मा विभेः। अ०-२-१५-३
जैसे सूर्य व चांद कभी नहीं डरते उसी प्रकार मैं निर्भय रहूं।

२४०. स्वस्ति नो अभयं च नः। अ०—१९-१४-१
हमारा कल्याण हो, हम निर्भय हों।

२४१. अभयं सोमः सविता नः कृणोतु। अ०—६-४०-१
वह सोम तथा प्रेरक पिता हमें निर्भय करें।

२४२. मा बिभेः न मरिष्यसि। अ०—५-३०-८
मत डर, तू अमर है मरने वाला नहीं।

२४३. इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत।
ऋ०—२-४१-१२

वह इन्द्र हमें सब ओर से निर्भय करे।

प्राण (१४)

२४४. ओं प्राणः प्राणः।

हे प्रभो ! मेरे प्राण वास्तव में प्राण हों। मेरा जीवन गुंजायमान हो। मैं अपने श्वास प्रश्वासों का सदुपयोग करूं।

२४५. प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे। अ०—११-४-१

उस प्राण को नमस्कार सारा विश्व जिसके वश में है।

२४६. प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम्। अ०—११-८-१५

यह सारा विश्व प्राण में स्थित है। प्राण ही सर्वाधार है।

२४७. प्राणो यज्ञेन कल्पताम्। य०—१८-२६

मेरे श्वास प्रश्वास यज्ञ से सफल हों।

२४८. अयुतो मे प्राणः। अ०—१९-५१-१

मेरे प्राणों में अयुत अपार शक्ति है।

२४९. प्राणं मे पाहि। अ०—१४-८

हे प्राण दातः मेरे प्राणों की रक्षा करो।

मानव जीवन (१५)

२५०. एष ते योनिः विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः। य—७-२४

हे मानव ! तेरा यह जीवन समस्त दिव्य गुणों के लिए है।

२५१. एष ते योनिः वैश्वानराय त्वा। य०—७-२५

यह तेरा जीवन विश्व जन हिताय है।

२५२. एष ते योनिः माध्वीभ्यां त्वा। य०—७-११

यह तेरा जीवन हृदय और वाणी की मधुरता के लिए है।

२५३. एष ते योनिः इन्द्राग्निभ्यां त्वा।

तेरा यह जीवन आत्मोन्नति तथा ज्ञानोन्नति के लिए है।

२५४. मित्रावरुणाभ्यां त्वा । य०—७-६

यह तेरा जीवन मित्रता तथा दोष वारण के लिए है।

२५५. मनुर्भव । ऋ०—११-५३-६

हे मानव तू मनन शील बन

२६५. पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः । ऋ०—६-७५-१४

मानव मानव की सब ओर से रक्षा करें।

स्वस्ति (१६)

२५७. स्वस्ति ते पारमशीय । य०—३-१८

हे देव ! यदि मैं तेरा पार पालूं तो मेरा कल्याण हो जावे।

२५८. यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । ऋ०—७-३५-१५

हे श्रेष्ठ विद्वानों हे देवजनो आप सदा कल्याणकारी उपदेशों से हमारी रक्षा करते रहो।

२५६. स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु । अ०—१-३१-४

हमारे माता पिता का कल्याण हो।

२६०. स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः । ऋ०—५-५१-१२

आदित्य ब्रह्मचारी तथा अखण्ड विद्वान् हमारे कल्याण के लिए हों।

२६१. स्वस्ति पन्थामनुचरेम । ऋ०—५-५१-१५

हम सदा कल्याण कारी मार्ग पर चलें।

२६२. स्वस्तये वायुमपब्रवामहै । ऋ०—५-५१-१२

हम आत्म कल्याण के लिए वायु विद्या, प्राण विद्या का उपदेश करें।

२६३. सुगा नः कर्त्त सुपथा स्वस्तये । ऋ०—१०—६—७

हे देवो ! हमारे जीवन कल्याण के लिए हमारे मार्गों को सरल बना दो। हमें सुगम पथों पर चलने की शिक्षा दो।

२६४. देवासः पिपृता स्वस्तये । ऋ०—१०—६३—८

हे देवो कल्याण के लिए हमें अपने ज्ञान से पूर्ण कर दो।

२६५. रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।

वह सर्व रक्षक, सर्व पालक सर्वोपरि देव, हमारे कल्याण के लिए हो।

२६६. स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । य०—२५—१९

वह पालक सम्पूर्ण वेद ज्ञान का भण्डार ब्रह्म हमारा कल्याण करे।

२६७. स्वस्ति मेऽस्मिन् पथि देवयाने भूयात् । य०—५-३३

देवों के पथ पर चलते हुए मेरा कल्याण हो।

२६८. स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु । य-२५-१९

वह बृहस्पति महान् शक्तियों का स्वामी हमारा कल्याण करे।

२६९. स्वस्ति गोभ्यः जगते पुरुषेभ्यः । अ०—१३—४

संसार में गौ आदि पशुओं का तथा मनुष्य मात्र का कल्याण हो।

२७०. सचस्वा नः स्वस्तये । ऋ०—१-१-९

हे अग्ने कल्याण के लिए हमें अपने प्रकाश से अपने सत्य ज्ञान से सींच दो।

गृहस्थों को उपदेशः (१७)

२७१. सूनृतावन्त स्त गृहाः । अ०—७-६०-६

हे गृहस्थों सच्ची और मधुर वाणी का प्रयोग करो।

२७२. सुभगाः स्त गृहाः।

हे गृहस्थो ! सुधन वाले बनो।

२७३. इरावन्त स्त गृहाः। अ०—७-६०-६

हे गृहस्थों अन्न, बल वीर्य, गुण युक्त बनो।

२७४. हसा मुदा स्त गृहाः। अ०—७-६०-६५

हे गृहस्थो सदा हंसने मुस्कराने वाले, प्रसन्नचित्त रहो।

२७५. अतृष्या अक्षुध्यास्त गृहाः। अ०—७-६०-६

हे गृहस्थो, तृष्णा रहित रहो।

२७६. गृहा मा अस्मद् बिभीतन। अ०—७-६०-६

हे गृहस्थों हम अतिथियों से न डरो।
अतिथियों का करना संमान।
अतिथियों को दो सेवा दान।
पूजन करो देवता मान।
हो जावे जीवन कल्याण।

२७७. सुगृहपतिस्त्वया अग्नेऽहं गृहपतिना भूयासम्। य०-२-२७

हे अग्ने अग्रणी गृहपते आप से शिक्षा ग्रहण करके मैं भी श्रेष्ठ गृहपति बनूं।

२७८. सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु। अ०—१९-१५-६

सब दिशाएं मेरी मित्र हों।

२७९. देवानां सख्यमुपसेदिमा वयम्। ऋ०—२-८९-२

हम सदा देवों के साथ मैत्री करें।

२८०. सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु। अ०—७-५१-१

मित्र मित्र की भलाई करे।

२८१. सखा सख्युर्न प्रमिनाति संगरम् साम—५५७

मित्र मित्र की बात नहीं टालता।

२८२. मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व। य०-२७-५

मित्र के साथ मैत्री रखने का यत्न कर।

२८३. न म इन्द्रेण सख्यं वियौषम्। ऋ०—२-१८-८

प्रभु से मेरी मैत्री न टूटे।

२८४. तवेद्धि सख्यममृतम्।

हे प्रभो! तेरी मैत्री अमर है।

२८५. शिवा नः सख्या सन्तु भ्रात्राग्ने। ऋ०—४-१०-१

हे अग्ने भाइयों से मेरी मैत्री शिव हो।

२८६. मित्रस्य यायां पथा। ऋ०—५-६४-३

हम मैत्री के मार्ग पर चलें।

२८७. सखा सखायमतरद् विषूचोः। ऋ०—७-१८-६

मित्र मित्र को संकट से बचाता है।

२८८. न स सखा यो न ददाति सख्ये। ऋ०—१०-११७-४

वह मित्र नहीं जो मित्र को नहीं देता।

२८९. स प्रथमो मित्रो वरुणो अग्निः। य०—७-१४

वह वरणीय अग्नि देव हमारा प्रथम मित्र है।

२९०. असपत्नाः प्रदिशो मे भवन्तु। अ०—१९-१४-१

दिशाएं मेरे लिए शत्रुता रहित हों।

२९१. मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। य०—३६-१८

हम सब को मित्र की दृष्टि से देखें।

२९२. प्रियं मा कृणु देवेषु। अ०—१९-६२-१

हे प्रभो! मुझे देवों का प्रिय बना दो।

२९३. प्रियं सर्वस्य पश्यत । अ०—१९-६२-१

सब को प्रिय करके देखो।

२९४. सखा सख्ये वरेण्यः । ऋ०—१-२६-३

मित्र मित्र के लिए श्रेष्ठ भावना युक्त हो।

२९५. न मे पूरवः सख्ये रिषाथन । ऋ०—१०-४८-५

हे मनुष्यो ! मेरी मैत्री में तुम्हें कभी नष्ट न होगा।

२९६. अपानुदं जनममित्रयन्तम् ।

शत्रुता रखने वाले को हम दूर कर दें।

२९७. अतप्ततनू र्न तदामो अश्नुते । साम—५६५

तपस्या रहित कच्चा विलासी मनुष्य प्रभु को नहीं पा सकता।

२९८. दिवमारुहत् तपसा तपस्वी । अ०—१३-२-२२

तपस्वी तप के द्वारा द्युलोक ज्ञान लोक को प्राप्त करता है।

२९९. तपसा युजा विजहि शत्रून् । अ०—१३-२-२५

तपयुक्त होकर शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर।

३००. त्वं तपः परितप्याजयः स्व. । ऋ०—१०-१६७-१

तू तप द्वारा स्वर्ग को जीत ले।

३०१. तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे । अ०—१९-४१-१

ऋषियों ने आत्म कल्याण के लिए पहले तप की दीक्षा ली तथा तप की दीक्षा दी।

३०२. सरस्वत्यै पच्यस्व । य०—१०-३१

तू वेद वाणी के लिए तप कर।

३०३. अश्विभ्यां पच्यस्व । य०—१०-३१

अश्वियों के लिए मस्तिष्क तथा हृदय के परिष्कार के लिए तप

कर साधना कर।

३०४. इन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व। अ०—१०—३१

तू सुतारक ऐश्वर्य शाली इन्द्र की ब्रह्म की प्राप्ति के लिए तप कर

सत्संग (२०)

३०५. दूरे पूर्णेन वसति। अ०—१०—८—१५

पूर्ण उन्नत की संगति से मनुष्य उन्नत हो जाता है।

३०६. दूरे ऊनेन हीयते। अ०—१०—८—१५

मानव बुरी संगति से अवनत हो जाता है।

३०७. यजाम देवान् यदि शन्कवाम। ऋ०—१—२७—१३

यदि हम कर सकें तो देवों का संग करें।

३०८. जुषस्व इन्द्र पुरुतमस्य कारोः। ऋ०—३—३६—७

हे इन्द्र, आत्मन् श्रेष्ठ कर्मा योगी का संग कर।

३०९. जानता संगमेमहि। ऋ०—५—५१—१५

हम पुनः पुनः ज्ञानियों का संग करें।

३१०. मा कीं ब्रह्मद्विषः वनम्। सा०—७—२

हम ईश्वर तथा वेद विरोधियों का संग न करें।

३११. यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नम्। य०—८—४

देवों की संगति प्रसन्नता, निर्विकार मन की देने वाली है।

३१२. त्र्यंबकं यजामहे। य०—३—६०

सूर्य-चन्द्र तथा ज्ञान जिसके तीन नेत्र हैं हम उस देव की संगति करें।

पवित्रता (२१)

३१३. केतपूः केतं नः पुनातु। य०—११-७

वह ज्ञान से पवित्र करने वाला देव हमारी बुद्धि को पवित्र करे।

३१४. जातवेदः पुनीहि मा। य०—१६-३६

हे वेद के प्रदातः मुझे पवित्र करो।

३१५. यः पोता स पुनातु मा। य०—१६-४१

वह पवित्र स्वरूप देव मुझे पवित्र करे।

३१६. मां पुनीहि विश्वतः। य०—१६-४२

हे देव सब ओर से मुझे पवित्र करो।

३१७. पुनन्तु मा देव जनाः। य०—१६-३६

आप्त विद्वान् मुझे पवित्र करें।

३१८. पुनन्तु विश्वा भूतानि। य०—१६-३६

सब पवित्र प्राणी मुझे पवित्र करें।

३१९. ब्रह्म तेन पुनातु मा। य०—११-४१

वह ब्रह्म उस वेद ज्ञान से मुझे पवित्र करे।

३२०. आयुः पवत आयवे। य०६-६७-८

सुजीवन के लिए जीवन पवित्र करो।

३२१. परादेहि शामुल्यम्। अ०—१४-१-२५

मलिनता को दूर करो।

३२२. पवित्रवन्तः परिवाचमासते । ऋ०—९-७३-३
पवित्रता के इच्छुक वेद विद्या का आश्रम लेते हैं।

३२३. शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः । ऋ०१०-१८-२
शुद्ध पवित्र तथा यज्ञमय जीवन वाले बनो।

३२४. पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः । य०—१९-३७
शान्त स्वभाव वाले पितर गुरुजन मुझे पवित्र करें।

३२५. चित्पतिर्मा पुनातु । य०—य०-४-४
वह विज्ञान का स्वामी देव मुझे पवित्र करे।

३२६. वाक् पतिर्मा पुनातु । य०—४-४
वेद वाणी का स्वामी मुझे पवित्र करे।

३२७. वसोः पवित्रमसि । य०—१-२
हे आत्मन् तू वसु का, शरीर का पवित्र कर्त्ता है।

३२८. वसोः पवित्रमसि शतधारम् । य०—१-३
हे ब्रह्म तुम इस वसु के, इस संसार के (शतधार) सैंकड़ों ज्ञान धाराओं से पवित्र करने वाले हो।

३३०. देवस्त्वा सविता पुनातु । ऋ०—९-८३-१
देव सविता तुझे पवित्र करे।

व्रताचरण (२२)

३३१. ओं अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि । य०—१-५

हे अग्ने व्रतों के पालक मैं व्रताचरण करना चाहता हूँ।

३३२. त्वमग्ने व्रतपा असि। य०—४-१६

हे अग्ने आप व्रतों के पालक हैं।

३३३. व्रतं कृणुत। य०—४-११

हे मानवो व्रत धारण करो।

३३४. व्रतेषु जागृहि। ऋ०—६-१९-६४

हे मानव! व्रत पालन के लिए सावधान रहें।

३३५. त्रिभिः व्रतैः अभिनो रक्षति। ऋ०—४-५३-५

राजा तीन व्रतों से प्रजा की चारों ओर से रक्षा करता है। १-आत्मसंयम व्रत २-जन संयम व्रत ३-शत्रु सयमव्रत।

३३६. अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि। ऋ०—१-२४-१०

वरुण के व्रत (नियम) अटल हैं।

३३७. तस्य व्रतान्युश्मसि। ऋ—१-२२-६

हम साधक उस ब्रह्म के नियमों का पालन करें।

३३८. विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। य०-६-५

उस विष्णु के कर्मों को देखो जिनसे हमें व्रतों का संकेत मिलता है। विष्णु के सभी कर्म व्रतरूप हैं अटल हैं।

३३९. अन्यव्रतोऽमानुषः।

व्रत रहित मनुष्य मनुष्य नहीं।

३४०. व्रतेन दीक्षामाप्नोति। य०—१९-३०

व्रताचरण या नियम पालम से मनुष्य अधिकारी बनता है।

३४१. व्रतं च श्रद्धां च उपैमि। य०—२०-२४

मैं व्रत तथा श्रद्धा को प्रात होता हूँ।

३४२. व्रता रक्षन्ते अद्रुहः । ऋ०—८-६७-१३

व्रतों की रक्षा वे करते हैं जो अद्वेषी हैं।

भद्रता (३३)

३४३. भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः । य०—२४-२१

हे देवों ! हम कानों से भद्र सुनें।

३४४. भद्रं पश्येम अक्षभिः । य०—२४-२१

हम आंखों से भद्र देखें।

३३५. चकार भद्रम् अस्मभ्यं आत्मने तपनं तु सः ।

अ०—४-१८-६

जो अपना तथा दूसरों का कल्याण करता है। उसका जीवन सुनहरी है।

३४६. भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदा तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे ।

अ—१६-४१-१

ऋषियों ने कल्याण की कामना से सर्व प्रथम तप की दीक्षा ली।

३४७. भद्रो नो अग्निराहुतः । य०—१५-३८

श्रद्धा से हवि दिया हुआ अग्नि हमारा कल्याण करे।

३४८. भद्रारातिः । य०—१५-३८

हमारे दान कल्याण कारी हों।

३४६. भद्रा उत प्रशस्तयः । य०—१५-३८

हमारी स्तुतियां भद्र हों।

३५०. भद्रं मनः । य०—१५-३६

हमारा मन भद्र हो।

३५१. यद् भद्रं तन्न आसुव ।य० –३०-३

हे सविता देव जो भी भद्र है वह हमें प्राप्त हो ।

३५२. आनो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वत: । य०–२५-१६

हमारे कल्याण कारी यज्ञ सारे विश्व में फैल जावें ।

३५३. देवानां भद्रा सुमतिः ऋजूययताम् । २५-१५

देवों की सरल मति, कल्याण कारिणी मति हमें सरल बनावे ।

३५४. भद्रं भद्रं क्रतु मस्मासु धेहि । ऋ०—१-१२३-१३

हे देव ! हममें कल्याण कारी यज्ञ मति तथा बल धारण कराओ ।

३५५. जिह्वा मे भद्रम् । य०—२०-६

मेरी रसना कल्याण कारिणी हो ।

३५६. भद्रं भद्रं न आभर-इषमूर्जं शतक्रतो । साम –१७३

हे शतक्रतो आप हम में कल्याणकारी इच्छा शक्ति तथा बल पराक्रम भर द ।

३५७. अस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त । य०—१७-६८

हे देवों हमें पवित्र श्रेष्ठ धन प्राप्त कराओ। हमें पवित्र धन कमाने की प्रेरणा करते रहो ।

मन (२४)

३५८. तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ।

वह मेरा मन शिव संकल्प युक्त हो ।

३५९. आ न एतु मनः पुनः । य०—३-५४

हमें यह मन पुनः पुनः प्राप्त हो यह मन स्थिर हो जावे ।

३६०. पुनः मनः पुनरायु म आगन् । य०—४-१५

मुझे मनः शक्ति पुनः प्राप्त हो।

३६१. मनो यज्ञेन कल्पताम्। य०—१८-७९

मेरा यह मन यज्ञ द्वारा सफल हो।

३६२. मनस्त आप्यायताम्।

हे पुत्र! तेरा मनो बल बढ़े।

दृढ़ता (२५)

३६३. हविर्धानं दृंह। य०—१-९

अपने हवियों के आधान, स्थान शरीर को, जीवन को दृढ़ कर समृद्ध कर, विशुद्ध कर।

३६४. ब्रह्मदृंह। य०—५-२७

अपने ब्रह्म को विवेक को समृद्ध कर।

३६५. क्षत्रं दृंह। य०—५-२७

अपने क्षात्र बल को समृद्ध कर।

३६६. आयुर्दृंह। य०—५-२७

अपने जीवन को समृद्ध कर।

३६७. प्रजां दृंह। य०—५-२७

अपनी प्रजा को समृद्ध कर।

३६८. अन्तरिक्षं दृंह। य०—५-२७

अपने अन्तः करण को दृढ़ कर समृद्ध कर।

३६९. दृंहन्ताम् दुर्याःपृथिव्याम्। य०—१-११

संपूर्ण भूमण्डल के गृहद्वार दृढ़ हों समृद्ध हों फलें फूलें।

३७०. दृते दृंह मा। य०-३६-१९

हे पाप ताप निवराक प्रभो मुझे दृढ़ करो-समृद्ध करो।

३७१. संशितं में ब्रह्म। य०—११-८१

मेरा विवेक प्रशस्त हो स्थिर हो।

जागते रहो (२६)

३७२. यो जागार तम् ऋचः कामयन्ते। साम०-उत्तरार्ध-९-७

जो जागता है उसे ऋग्वेद का ज्ञान प्राप्त होता है।

३७३. यो जागार तमु सामानि यन्ति। सा०—३-९—७

जो जागता है उसे साम की उपासना प्राप्त होती है।

३७४. भूत्यै जागरणम्। य०-३०—१७

जागना कल्याण के लिए है।

३७५. अभूत्यै स्वप्नम्। य०-३०-१७

सोना विनाश के लिए है।

३७६. जागृवांसः समिन्धते। ऋ०—१—२२—२१

जागने वाले ही प्रकाश करते हैं। जागने वाले ही चमकते हैं।

३७७. उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि। य०—१५—५४

हे आत्माग्ने बोध प्राप्त कर। प्रतिक्षण जागृत रह, सचेत रह।

नमस्कार (२७)

३७८. नमः शिवाय च शिवतराय च। य०—१६—४१

कल्याणतम, सर्वोत्कृष्ट कल्याण कारी भगवान् को नमस्कार हो।

३७९. नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च। य०—१६-३२

बड़ों को भी तथा छोटों को भी नमस्कार।

३८०. नमो मात्रे पृथिव्यै। य०—९–२२

भूमिमाता को नमस्कार अर्थात् हम भूमिमाता का समादर करें।

३८१. तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः। अ०—१०–८–१

उस ज्येष्ठ तथा श्रेष्ठ ब्रह्म को नमस्कार।

३८२. नमस्ते भगवन्नस्तु। य०–३६–२१

हे ऐश्वय शालिन् आपको नमस्कार।

३८३. नमस्ते हरसे शोचिषे। य०–३६–२०

उस तेजो मय प्रदीप्त देव को नमस्कार।

३८४. नमस्ते अस्तु अर्चिषे। य०–३६–८

उस पूजनीय देव को नमस्कार।

३८५. नमो भरन्त एमसि। ऋ०—१–१–७

हे अग्ने! हम तेरे प्रति नमन करते हुए तेरे समीप आ रहे हैं।

३८६. नमसेदुप सीदत। ऋ—९–११–६

नमस्कार द्वारा ही उस ब्रह्म के समीप उपस्थित होवो

आगे बढ़ो ऊंचे उठो (२८)

३८७. उद्यानं ते पुरुष नावयानम्। अ०—८–१–६

हे पुरुष ऊंचा उठ नीचे न गिर।

३८८. शतं जीव शरदो वर्धमानः। अ०–३–११–४

बढ़ता हुआ सौ वर्ष तक जी।

३८९. प्रेता जयता नरः। अ०–३–१९–७

हे वीरो आगे बढ़ो विजय प्राप्त करो।

३६०. प्रतितिष्ठोऽर्ध्वः । अ० —८—१२ ६
ऊंचा होकर प्रतिष्ठित हो ।

३६१. उत्क्रामातः पुरुष मावपथः । अ० — ८—१—४
हे पुरुष जीवन मे ऊंचा उठ नीचे न गिर ।

३६२. उत्क्राम महते सौभगाय । य० ११ — २१
अपने महान् सौभाग्य के लिए आगे बढ़ ।

३६३. वर्धिषीमहि च वयमा च प्यासिषी महि । य०-३८-२१
हम बढ़ और बढ़ावें ।

३६४. उत्तिष्ठत संनह्यध्वम् । अ०-११-११-२
उठो वीरो तैय्यार हो जावो ।

३६५. उत्तिष्ठतावपश्यत । अ० — ७ — ७५—१
उठो और देखो ।

३६६. आत्मा अनिभृष्टः । अ०-१६-३-२
मेरा आत्मा गिरने वाला न हो ।

३६७. भवा वृधः सखीनाम् । ऋ० — ७-३२ — २५
अपने मित्रों को बढ़ा ।

३६८. राष्ट्रं रोह द्रविणं रोह । अ० — १३-१-३
राष्ट्र को बढाओ, धन को बढ़ाओ ।

३६६. आरोह तमसो ज्योतिः । अ० — ८-१ — ८
अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ो ।

एकता (२६)

४००. संगच्छध्वम् । ऋ०-१०-१५१-२

मिलकर चलो।

४०१. संवदध्वम्। ऋ०-१०-१५१-२
मिलकर बोलो। वाणी में एकता हो।

४०२. संवो मनांसि जानताम्। ऋ०-१०-१५१-२
तुम ज्ञानवान् हो तुम्हारे मन एक हों।

४०३. समानो मन्त्रः। ऋ०-१०-१५१-३
तुम्हारे विचार एक हों।

४०४. समाना हृदयानि वः। ऋ०—१०-१५१-४
तुम्हारे हृदय एक हों।

४०५. समानीव आकूतिः। ऋ०—१०-१५१-४
तुम्हारे सकल्प एक हों।

४०६. मा वियौष्ठ। अ०—३-३०-५
अलग मत होवो-मिलकर रहो।

४०७. समानीप्रपा सह वो अन्न भागः। अ०—३-३०-६
तुम्हारे खान पान समान हो इकट्ठे बैठकर प्रेम पूर्वक खाओ।

४०८. समितिः समानी। ऋ०—१०-१५१-३
तुम्हारी सभा में एकता हो।

४०९. समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः। ऋ०—१०-१५१-३
मैं (ब्रह्म) तुम्हें समान रूप से मन्त्र (वेद) प्रदान कर रहा हूं।

४१०. समानेन वो हविषा जुहोमि। ऋ०—१०-१५१-३
मैं तुम्हें समान रूप से उपभोग सामग्रियाँ दे रहा हूँ।

४११. सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यत। अ०—३-३०-६

सब मिलकर अग्नि (ब्रह्म) की उपासना करो।
मिलकर अग्नि होत्र करो।

दान (३०)

४१२. पूषन् दानाय चोदय। ऋ०—६-१३-३
हे पूषन्, दान के लिए अन्तः प्रेरणा देते रहो।

४१३. दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते। ऋ०—१-१२५-५
दानो अमर हो जाते हैं।

४१४. उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्थुः। ऋ०—१०-१०७-२
दानी सदा उच्च स्थान पाते हैं।

४१५. दक्षिणावान् प्रथमो हूत एति। ऋ०—१०-१०७-२
दानी पहले बुलाया जाता है।

४१६. उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति। ऋ०—१०-११७-५
देने वाले का धन नहीं घटता।

४१७. न स सखा यो न ददाति सख्ये। ऋ०—१०-११७-४
वह मित्र नहीं जो मित्र को नहीं देता।

४१८. स इद् भोजो यो गृहवे ददाति। ऋ०—१०-११७-३
वही उदार है जो दुर्बल को देता है।

४१९. केवलाघो भवति केवलादी। ऋ०—१०-११७-३
अकेला खाने वाला पापी होता है।

४२०. दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि ऋ०—१-१-६
हे अग्ने आप दाता का सदा कल्याण करते हैं।

४२१. इयंदक्षिरणा पिन्वते सदा । ऋ०—१-१२५-५
दान सदव सबको तृप्त करता है।

४२२. मा पृणन्तो दुरितेन आरम् । ऋ०—१-१२५-७
दाता कष्ट में नहीं पड़ते।

४२३. देवानां रातिरभि नो निवर्त्तताम् । य०—२५-१५
हमे सदा देवों का दिव्य दान प्राप्त हो।

४२४. शतहस्त समाहर, सहस्रहस्त संकिर । ऋ०—३-२४-५
सौ हाथों से कमाओ तथा हजार हाथों से दान करो। अर्थात जीवन में दान खूब करो।

४२५. सत्रस्य ऋद्धिरसि । य०—८-५२
हे मानव तू दान को यज्ञ को बढ़ाने वाला है।

यश (३१)

४२६. अस्मे धेहि जात वेदो महि श्रवः । य०—१५-३५
हे ब्रह्म हम में महान् यश की स्थापना करो।

४२७. अयं मे वरुणो मणिः कीर्त्ति भूतिं नियच्छतु यशसा समनक्तु मा।
वह वरणीय देव मुझे ऐश्वर्य, कीर्त्ति और यश से संपन्न करे।

४२८. यशो मुखम् । य०—२०-५
मेरा मुख यश है। यशः प्राप्ति का साधन है। मुख से सत्य-मधुर-हित मित और शुद्ध बोलने वाला यशस्वी होता है।

४२९. सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयताम्।

मुझ में सत्य तथा ऐश्वर्य के साथ-२ यश की स्थापना हो।

सविता (३२)

४३०. सविता प्रसुवाति। य०—११-३

सविता देव सुप्रेरक है।

४३१. मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः। य०—११-४

उस देव सविता की महिमा महान है।

४३२. इमं नो देव सवितः यज्ञं प्रणय। य०—११-८

हे देव सवितः हमारे जीवन यज्ञ को सम्यक् चला।

४३३. देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे। य०—१-१

वह सविता देव तुम्हें श्रेष्ठतम कर्मों की प्रेरणा दे।

मातृभूमि (३३)

४३४. माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। अथर्व – १२-१-१२

भूमि मेरी माता है मैं इस का पुत्र इसे दुःखों से छुडाने वाला हूँ।

४३५. वयं तुभ्यं बलिहृताः स्याम। अ०—१२-१-६२

हे भूमिमाता हम तेरे लिए बलिदान देने वाले हों।

४३६. वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः। य०—९-२३

हम पुरोहित राष्ट्र के प्रति जागरूक रहें।

४३७. सत्यं बृहत् ऋतमुग्रम् दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति। अथर्व—१२-१-१

महान् सत्य, उग्र अनुशासन, दीक्षा तप-वेदज्ञान तथा यज्ञ ये पृथिवी के छः आधार हैं।

४३८. विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु। अ० — १-३१-४

सारा विश्व ऐश्वर्व संपन्न तथा सद् ज्ञान संपन्न हो।

सूर्य से प्रेरणा (३४)

४३९. स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।

ऋ०—५-५१-१५

हम सूर्य व चन्द्र के समान कल्याण कारी मार्ग पर चलें।

४४०. पश्येम नु सूर्य मुच्चरन्तम्। ऋ०—१०-५९-४

हम उदय होते हुए सूर्य के दर्शन करें।

४४१. अहं सूर्यमिवाजनि अ० —२०-११५-१

मैं सूर्य के सदृश तेजस्वी-धीर तथा विकारों का नाशक बनूं।

४४२. सूर्यस्यावृतमन्वावर्त्ते। य०—२-२७

मैं सूर्य मण्डल का अनुकरण करता हुआ मर्यादा पालक बनूं।

४४३. सूर्य एकाकी चरति। य—२३-१०

सूर्य अकेले विचरते हैं।

पुरुषार्थ (३५)

४४४. कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयोमे सव्य आहितः।

अ०—७-५२-८

यदि पुरुषार्थ मेरे दायें हाथ में है।

तो विजय मेरे बायें हाथ का खेल है।

४०५. पापोनृषद्वरो जनः। ब्राह्मण ऐतरेय

आलसी मनुष्य पापो है।

४४६. यन्ति प्रभादमतन्दाः। ऋ०—८–२-१८

आलस्य रहित उद्योगी ही श्रेष्ठ आनन्द प्राप्त करते हैं।

४४७. नाना श्रान्ताय श्रीरस्ति। ऐतरेय ब्राह्मण।

आलसी को लक्ष्मी प्राप्त नहीं होती।

सुखदाता (३६)

४४८. स त्वं न इन्द्र मृडय। ऋ०—८–८०–२

हे ऐश्वर्य के स्वामी इन्द्र हमें सुखी करो।

४४९. मृडा सुक्षत्र मृडय। ऋ०—७–८९–१

हे सुखदाता श्रेष्ठ रक्षक हमें सुखी करो।

४५०. क्रमध्वमग्निना नाकम्। य०–१७–६९

अग्नि के द्वारा मोक्ष को स्वर्ग सुख को प्राप्त करो।

४५१. नत्वदन्यो मधवन्नस्ति मर्डिता।

हे इन्द्र आप के अतिरिक्त कोई पदार्थ सुख देने वाला नहीं।

हम शतायु हों (३७)

४५२. पश्येम शरदः शतम् । य०—३६–२४

हम सौ वर्ष तक प्रभु की महिमा को देखें ।

४५३. जीवेम शरदः शतम् । य०—३६–२४

हम सौ वर्ष तक जीवित रहें ।

४५४. शृणुयाम शरदः शतम् । य०—३६–२४

हम सौ वर्ष तक तेरी महिमा सुनते रहें ।

४५५. प्रब्रवाम शरदः शतम् । य०—३६–२४

हम सौ वर्ष तक श्रेष्ठवाणी बोलते रहे ।

४५६. अदीनाः स्याम शरदः शतम् । य०—३६–२४

हम सौ वर्ष तक अदीन स्वावलम्बी, स्वतन्त्र रहें ।

४५७. रोहेम शरदः शतम् । अ०—१९–६७–४

हम सौ वर्ष तक बढ़ें फलें-फूलें ।

४५८. बुध्येम शरदः शतम् अ०—१९–६७–३

हम सौ वर्ष तक बोध प्राप्त करते रहें ।

४५९. शतं जीव शरदो वर्धमान । अ०—२०–९६–९

तू बढ़ता फलता फूलता हुआ सौ वर्ष तक जी ।

प्रेम स्नेह (३८)

४५९. अन्योऽन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या । अ०-३-३०-१

एक दूसरे से इस प्रकार प्रेम करो जैसे नवजात बछड़े से गौ ।

४६०. प्रियं सर्वस्य पश्यत । अ०—१९-६२-२

सब को प्रेम भरी दृष्टि से देखो ।

४६१. घृतस्यधारा अभितत् पवन्ते । य०—१७-९७

स्नेह की धाराएं वातावरण को चारों ओर से पवित्र कर देती हैं ।

४६२. पतयन्ति यह्वाः घृतस्य धाराः । य०—१७-९५

स्नेह की धारायें सुपथ पर चलाती हैं ।

४६३. घृतं मिमिक्षे । य० —१७-८४

स्नेह सींचता है । वह परिवार समाज तथा राष्ट्र को सींच देता है ।

४६४. घृतमस्य योनिः । य०—१७-८८

स्नेह ही इस राष्ट्र का आधार है ।

४६५. घृतस्यनाम गुह्यं यदस्ति । य०—१७-८९

स्नेह की ख्याति गुप्त है । यह स्नेह हृदय की वस्तु है । हृदय में छिपा रहता है ।

४६६. जिह्वा देवानाम् अमृतस्य नाभिः । ७ य० १७—८९

यह स्नेह देवों की रसना है । यह स्नेह अमृत का केन्द्र है । सुख समृद्धि का आधार है ।

अहिंसा (३९)

४६७. मा रिषण्यत साम—२४२

हिंसा मत करो।

४६८. मा स्रेधन्तं रयिर्नशत्। ऋ०—३२-२१

हिंसक को ऐश्वर्य प्राप्त न हो।

४६९. मा हिंसीरेकशफम्। य०—१३-४८

एक खुर वाले घोड़ा गधा आदि पशुओं की हिंसा मत कर।

४७०. गां मा हिंसीः। य०—य० १३-४२

गौ को हिंसा मत कर।

४७१. मानो द्विषत कश्चन। अ०—१२-१-१८

हमसे कोई द्वेष न करे।

४७२. विमृधो नुदस्व। अ०—१३-१-२७

हिंसक को निकाल दो।

४७३. वृहस्पते क्षयस इत् पियारुम्।

हे महान् देव तू हिंसक को अवश्य मारता है।

४७४. न किर्देवा मिनीमसि। ऋ०—१०-१३४-७

हे भगवान् हम हिंसा न करें।

४७५. आरे गोहा नृहा।

गौ घातक तथा मनुष्य घातक हम से दूर रहें।

ब्रह्मचर्य (४०)

४७६. ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्यु मपाघ्नन। अ०—११-५-१९

ब्रह्मचर्य के तप से देवों ने मृत्यु को जीत लिया।

४७७. ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति। अ०-११-५-१७

ब्रह्मचर्य के तप से राजा राष्ट्र को रक्षा करता है।

४७८. ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्। अ०-११-५-१८

कन्या ब्रह्मचर्य के द्वारा युवा बलिष्ठ पति को प्राप्त करतो है।

४७९. आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छति।

अ०—११-५-१७

आचार्य ब्रह्मचर्य के द्वारा ही ब्रह्मचारी को चाहता है।

४८०. इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत्। अ०-११-५-१९

आत्मा ने निश्चय से ब्रह्मचर्य के द्वारा इन्द्रियों को सुख शान्ति दी।

प्रभु महिमा (४१)

४८१. न कि इन्द्र त्वदुत्तरम् न ज्यायो अस्ति वृत्रहन्।

साम म०—२०५

हे इन्द्र तुझ से बढ़कर कोई नहीं है शत्रु हन्ता तुझ से महान् कोई नहीं।

४८२. न त्वामिन्द्रातिरिच्यते। ऋ०—८-९२-२२

हे इन्द्र तुझ से बढ़कर कोई नहीं।

४८३. त्वं राजा जनानाम्। अ०—२०-९३-३

तुम्ही प्रजा के राजा हो।

४८४. न तस्य प्रतिमा अस्ति। अ०—३२-३

उस महान् ब्रह्म की कोई प्रतिमा तुलना या मूर्ति नहीं।

४८५. सर्वं तदिन्द्र ते वशे। अ०—२०-११२-१

हे इन्द्र सभी कुछ तेरे वश में है।

४८६. इन्द्रो विश्वस्य राजति। य०—३६-८

वह इन्द्र संपूर्ण विश्व में प्रकाशित हो रहा है।

४८७. यस्य छायाऽमृतम्। य०—२५-१३

उस प्रभु का आश्रय अमृत है मोक्षानन्द प्रद है।

४८८. न त्वावां अन्यो दिव्यो पार्थिवो न जातो न जनिष्यते।

अ०—२०-१२१-२

हे इन्द्र आप से अन्य कौन भूवासी दिव्य शक्ति व दिव्य-गुण युक्त होगा। (कोई नहीं।)

प्रार्थना (४२)

४८९. तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। य०—१९-९

हे अग्ने आप तेजोमय हैं मुझे भी तेज प्रदान करो।

४९०. वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि। य०—१९-९

हे ब्रह्म आप वीर्य के भण्डार है मुझमें पराक्रम का आधान करो।

४९१. बलमसि बलं मयि धेहि। य०—१९-९

हे देव, आप बलों के भण्डार हैं मुझमें बल का प्रवेश कराओ।

४९२. ओं मन्युरसि मन्युं मयि धेहि य०—१९-९

हे देव आप मन्यु रूप हैं मुझे मन्यु प्रदान करो। क्रोध का स्वस्थ रूप मन्यु है।)

४९३. सहोऽसि सहो मयि धेहि । य०—१९–९

हे ब्रह्म आप धैर्य रूप हो मुझ में धैर्य का आधान कराओ।

४९४. मतिश्च में सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् । य०-१८-११

हे ब्रह्म मेरी मति तथा सुविचार यज्ञ से सफल हों।

४९५. मयि धेहि रुचा रुचम् । य०—१८-४८

हे प्रकाश मय देव अपनी दोप्ति से मुझे भी प्रदीप्त करो।

४९६. शंयो रभिस्रवन्तु नः । य०—३६–१२

हे देव हमारे चारों ओर सुख शान्ति की वर्षा हो।

४९७. अहानि शं भवन्तु नः । य०—३६–११

हमारे दिन शान्ति प्रद हों।

४९८. शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे । य०—३६–८

हे देव द्विपद् चतुष्पद् सभी का कल्याण हो।

४९९. अप नः शोशुचदघम् । य०—३५-२१

हे पाप विनाशक हमारे पाप दूर हों।

५००. ऋचं वाचं प्रपद्ये । य०—३६–१

हे ब्रह्म मैं अपनी वाणी को ऋचा बनालूं । मेरी वाणी मन्त्रों के समान सत्य-मधुर-हित-मित हो।

५०१. स नो वसून्याभर । य०—१५०–३०

हे इन्द्र हमें वस्तुओं से' धन सामग्रियों से भर पूर कर दो।

५०२. इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि । ऋ०–२-२१-६

हे इन्द्र श्रेष्ठ ऐश्वर्य प्रदान करो।

विविध (४३)

५०३. शण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रों: । य०—१५—५

सब उस अमरदेव के अमृत पुत्र उसकी अमरवाणी को सुनें।

५०४. स जायसे मथ्यमान: । १५—२८

हे ब्रह्म तू मन्थन करने पर ही प्रकट होता है। उत्कृष्ट साधना के बिना तू प्रकाशित नहीं होता।

५०५. इडस्पदे समिध्यसे। य०—१५—३०

हे देव तू इस इड़ा पृथिवी पर स्थान स्थान पर प्रकाशित हो रहा है।

५०६. मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पि:। ऋ—८-४८-१४

आलस्य तथा बकवाद हम पर शासन न करे।

५०७. गुरुः पुनरस्तु स: । ऋ०—१-१०७-४

वह गुरुओं का गुरु हमारा पुन: पुन: गुरु बने।

५०८. इन्द्र: स नो युवा सखा। सा०—१२७

वह इन्द्र हमारा युवा सखा है। दोषों से दूर करने वाला गुणों को धारण कराने वाला।

५०९. तं संप्रश्नं भुवना यन्त्यन्या: । य०—१७-२७

उस ',संप्रश्न'' ब्रह्म में सारे भुवन स्थित हैं। संप्रश्न-जिसके बारे में विविध प्रश्न पूछे जाते हैं।

५१०. अर्चत प्रार्चत-प्रिय मेधासो अर्चत । अ०—२०-९२-५

हे मेरे प्यारे मेधावी पुत्रों-पूजन करें, श्रद्धा से पूजा करो-बार २ पूजा करो।

५११. तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । य०—३१—१६

यज्ञों का अनुष्ठान हमारे देवों का मुख्य धर्म था ।

५१२. मित्रं मे सहः । य०—२०-६

धैर्य मेरा परम मित्र है ।

५१३. भासान्तरिक्षमापृण । य०—१७-७२

हे आत्मन् अपनी आत्मा से हृदय को तथा बाह्य वायु मण्डल को जगमगा दे ।

५१४. त्रितः कूपेऽवहितः । ऋ०—१-१०५-१७

त्रित कुए में पड गया । कुविचार कदाचार-कदाहार इन तीनों अभिशापों से अभिशप्त को त्रित कहते हैं मन-वाणी-कर्म से मिथ्याचारी चित है । वह कुए में, पापगर्त्त में पड़ गया है ।

५१५. देवान् अवत ऊतये । ऋ०—१-१०५-१७

वह त्रित रक्षार्थ देवों को बुला रहा है ।

५१६. त्वमस्माकं तव स्मसि । ऋ०—८-९२-३२

हे देव हम तेरे हैं तू हमारा है । यह सम्बन्ध अटूट है ।

५१७. पूषन् इह क्रतुम् विदः ऋ०—१-४२-६

हे परिपालक देव हमें कर्त्तव्य बोध कराओ ।

५१८. अकर्मा दस्युः । ऋ०—१०—२२

निकम्मा या कुकर्मी अनार्य है ।

५१९. यदन्तरं तद्बाह्यम् । अ०—२—३०—४

जो तुम्हारे अन्दर हो वही बाहिर हो एकता वाणी व कर्म में हो ।

५२०. आप्नुहि श्रेयांसम् अ०—२—११ १

हे मानव श्रेष्ठता को प्राप्त करो ।

५२१. दिवं ते धूमो गच्छतु य०—६—२१
तेरा यश स्वर्ग लोक तक पहुंच जावे।

५२२. राष्ट्रं धारयताम् ध्रुवम्। ऋ०—१०-१३७—५
राष्ट्र को स्थिरता से धारण करो। राष्ट्र भक्त बनो।

५२३. आपः सर्वस्य भेषजीः। ऋ०-१०-१३७—६
जल सब रोगों की एक मात्र दवा है।

५२४. अयं मे हस्तः भगवान्। ऋ०-१०—६०-१८
मेरा यह हाथ भाग्य शाली है।

५२५. माऽहिर्भूः मा पृदाकुः। य०—६-१२
सांप मत बन-भेड़िया मत; बन क्रूरता से दूर रह।

५२६. परैतु मृत्युरमृतं न एतु। अ०—१८-३-३२
मृत्यु हम से दूर भाग जाये। हमें अमरता प्राप्त हो।

५२७. आरोह तमसो ज्योतिः। अ०—८-१-८
अन्धकार से निकल प्रकाश की ओर चल।

५२८. मा जीवेभ्यः प्रमदः। अ०—८-१-७
अन्य प्राणियों के प्रति प्रमाद न कर।

५२९. घृतेन कलिं क्षियामि। अ०—७-१०९-१
मैं स्नेह से आपस के कलह को दूर करता हूं।

५३०. अनृणा अस्मिन् अनृणा परस्मिन्। अ०—६—११७-३
हम लोक परलोक दोनों में ऋण रहित हों।

५३१. अनुव्रतः पितुः पुत्रः। अ०—३-३०-२
पुत्र पिता के शुभाचरणों के अनुकुल आचरण करे।

५३२. ब्रह्म वर्म ममान्तरम् । अ०-१-१९-४
ब्रह्म मेरा अन्दर का कवच है ।

५३३. धर्माय सभाचरम् । य० – ३०—६
सभासद धर्म के लिए चुने जाते हैं ।

५३४. रत्नमभजन्त धीराः । य०–१९-५२
धीर पुरुष रत्न प्राप्त करते हैं ।

५३५. अक्षैर्मा दीव्यः । ऋ०-१०-३४-१३
जुआ मत खेलो ।

५३६. न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः । ऋ०—४–३३–११
देव परिश्रमी के अतिरिक्त किसी की सहायता नहीं करते ।

५३७. यस्तन्न वेद किम् ऋचा करिष्यति । ऋ०-१-१६४–३९
जो उस पर ब्रह्म को नहीं जानता वह वेद पढ़कर क्या करेगा ।

५३८. सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः । य०-१२–४४
यजमान की कामनाएं सत्य हों ।

५३९. सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा य०—७-१४
वेद की संस्कृति सर्व प्रथमा तथा मुख्या है वह सम्पूर्ण विश्व द्वारा
मृत्यु का शासन द्वियद् चतुष्पद सभी पर है ।

५४०. मृत्युरीशे द्विपदां मृत्युरीशे चतुष्पदाम् । अ०-८–२–२३
वरणीया तथा विश्व के दोषों का वारण निवारण करने वाली है ।

वेद महिमा

है ऊंचा वेद भगवान् सभी से ऊंचा।
आदि सृष्टि में ईश्वर ने
वेद ज्ञान दिया दान सभी से ऊंचा।
सब विद्या का यही खजाना
सभी सुखों की खान सभी से ऊंचा।
यज्ञ विधान इसी में जानो
यही धर्म धन प्राण सभी से ऊंचा।
ईश्वर की यह वाणी कहिए
ऋषियों का यह प्राण सभी से ऊंचा।
जो चाहो तुम जन्म सुधारा
वेदामृत करो पान सभी से ऊंचा
है ऊंचा वेद भगवान् सभी से ऊंचा॥

मुद्रकः—विश्व प्रिंटिंग प्रेस २७१ खारी कुंआ
मेरठ शहर